



शिशुओं के पोषण में माता-पिता एवं सामाजिक-आर्थिक स्थिति संबंधी कारकों
के प्रभाव का अध्ययन

—डॉ० पुष्पा रानी

गृह विज्ञान विभाग,
ल०ना०मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा।

शोध-सार

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य शिशुओं के पोषण में माता-पिता एवं परिवार के सामाजिक-आर्थिक स्थिति संबंधी कारकों का प्रभाव का अध्ययन करना था। इसके लिए दलसिंहसराय प्रखंड से कुल 300 वैसे माता-पिता का चयन उद्देश्यात्मक चयन पद्धति के आधार पर किया गया, जिनके पास 0 से 1 वर्ष तक की उम्र के शिशु थे। शोधार्थी द्वारा विकसित व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र के माध्यम से संगत सूचनाएँ प्राप्त की गईं। प्राप्त सूचनाओं के विष्लेषण के आधार पर परिणाम तैयार किया गया। परिणाम के रूप में पाया गया कि— (i) शिशुओं के पोषण पर माता-पिता के आपसी संबंध का सार्थक एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। (ii) शिशुओं के पोषण स्तर पर माता-पिता का बच्चों के प्रति लगाव संबंधी कारक का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। (iii) जागरूक माता-पिता के शिशुओं का पोषण स्तर जागरूक नहीं रहनेवाले माता-पिता के शिशुओं के पोषण स्तर की अपेक्षा बेहतर होता है। (iv) शिशुओं के पोषण पर परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का सकारात्मक एवं सार्थक प्रभाव पड़ता है।

परिचय:

वर्तमान समय में शिशुओं का पोषण माता-पिता के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो गया है। शिशुओं के पोषण के संदर्भ में विभिन्न विशेषज्ञों की राय है कि शिशु का पोषण जिस माध्यम से होता है और जितनी मात्रा में होती है, उससे अधिक संक्रमण एवं कुपोषण की संभावना होती है।

शिशुओं का सर्वांगीण विकास उचित पोषण एवं संतुलित आहार पर निर्भर करता है। शिशुओं के लिए संतुलित आहार की व्यवस्था अनेक कारकों पर निर्भर करती है। बच्चे का शैशवकाल जो कि जन्म की अवधि से एक वर्ष तक की अवस्था होती है, में सर्वांगीण विकास प्रारंभ होती है। अतः इस अवस्था में अधिक ध्यान शिशुओं के आहार पर देना आवश्यक हो जाता है।

शिशुओं के पोषण में माता-पिता से संबंधित कारक का महत्वपूर्ण स्थान होता है। शिशु के माता-पिता संबंधी कारक में माता-पिता के बीच का संबंध, माता एवं पिता का अपने शिशु के साथ लगाव, मनोवृत्ति, माता-पिता की जागरूकता इत्यादि कारक होते हैं, जो शिशुओं के पोषण स्तर को प्रभावित करते हैं। सकारात्मक संबंध वाले माता-पिता के शिशुओं का पोषण सही ढंग से होता है, इसी तरह शिशुओं के पोषण के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति एवं अच्छे लगाव का स्तर भी शिशुओं के पोषण को प्रभावित करता है। जागरूक माता-पिता के शिशुओं का भरण-पोषण भी सही ढंग से होता है।

परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति भी शिशुओं के भरण-पोषण को प्रभावित करती है। इस संबंध में अनेक शोधों के उपरान्त बताया गया है कि परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का सार्थक प्रभाव शिशुओं के भरण-पोषण पर पड़ता है। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले परिवार के शिशुओं की देख-रेख एवं पोषण भी सही ढंग से होता है।

हमारे भारतीय समाज में पारिवारिक एवं सामाजिक स्तर पर विभिन्न सकारात्मक कारकों एवं नकारात्मक कारकों से शिशुओं का पोषण प्रभावित होता है, जिससे शिशुओं के कुपोषित एवं बीमार होने की संभावना झलकने लगती है। इसी संदर्भ के आधार पर शोधार्थी द्वारा शिशुओं के पोषण पर माता-पिता के संबंध एवं सामाजिक-आर्थिक स्थिति संबंधी कारक के प्रभाव संबंधी शीर्षक पर अध्ययन करने का निर्णय लिया गया है।

पूर्व के अध्ययनों की समीक्षा:

प्रस्तुत शोध को मानक स्तर एवं सही दिशा में सम्पादित करने के लिए कुछ पूर्व के अध्ययनों की समीक्षाएँ की गई हैं जिसमें से निम्नांकित मुख्य पूर्व के अध्ययनों प्रस्तुत हैं :

डॉ० सिंह, वृन्दा (2000) ने अपनी पुस्तक 'आहार विज्ञान एवं पोषण' में शिशुओं के पोषण के संदर्भ में कहा है कि शिशुओं के पोषण में माता का दूध सर्वोत्तम आहार हाता है इन्होंने यह भी कहा है कि यदि शिशुओं को माता की दूध की जगह अन्य दूध दिया जाता है तो उसे पूरक आहार अवश्य दिया जाना चाहिए।

नारायण, सुधा (1998) ने अपनी पुस्तक 'परिवार नियोजन' में अपना दृष्टिकोण व्यक्त करते हुए कहा है कि बच्चों को नियमित रूप से निर्धारित समय पर पौष्टिक आहार देते रहना चाहिए।

डॉ० वर्मा, कपूर एवं गोयल (2001) ने अपनी पुस्तक 'बाल-पोषण' में शिशुओं के पोषण से संबंधित तथ्य प्रस्तुत करते हुए कहा है कि शिशुओं के सर्वांगीण विकास के लिए पोषणयुक्त एवं संतुलित आहार आवश्यक हाता है।

कुमारी, रेणु (2004) ने 'बच्चों के विकास में पोषण की भूमिका' से संबंधित शोध-कार्य की है और परिणाम में पाया है कि पोषण का बच्चों के शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः बच्चों के पोषणयुक्त आहार पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

अध्ययन का उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शिशुओं के पोषण पर माता-पिता संबंधी एवं सामाजिक-आर्थिक संबंधी कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना था।

परिकल्पना :

प्रस्तुत शोध की मुख्य परिकल्पनाएँ निम्नांकित थी :

- (i) शिशुओं के पोषण स्तर पर माता-पिता के आपसी संबंध का सकारात्मक प्रभाव होगा,
- (ii) माता-पिता का अपने शिशुओं के प्रति लगाव का सार्थक प्रभाव शिशुओं के पोषण पर होगा,
- (iii) माता-पिता का शिशुओं के पोषण के प्रति जागरूकता का प्रभाव शिशुओं के पोषण स्तर पर होगा,
- (iv) उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले शिशुओं का पोषण स्तर निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले परिवारों के शिशुओं के पोषण स्तर से अपेक्षा बेहतर होगा।

*** प्रविधि :**

(i) प्रतिदर्श :

प्रस्तुत शोध में कुल 300 वैसे माता-पिता का चयन उद्देश्यात्मक चयन पद्धति के आधार पर किया गया, जिनके पास शून्य से 1 वर्ष तक के शिशु थे।

(ii) अध्ययन क्षेत्र :

प्रस्तुत शोध में अध्ययन क्षेत्र के रूप में समस्तीपुर जिला के दलसिंहसराय प्रखंड का चयन किया गया।

(iii) शोध मापनियाँ :

उत्तरदाताओं से संगत सूचनाओं की जानकारी हेतु शोध शीर्षक से संबंधित एक सूचना-प्रपत्र का प्रयोग किया गया।

प्रदत्त संग्रह की प्रक्रिया :

उत्तरदाताओं से संगत-सूचनाओं की जानकारी हेतु शोधार्थी द्वारा अध्ययन क्षेत्र का भ्रमण किया गया। तत्पश्चात् उत्तरदाताओं का चयन करते हुए उसकी सूची बनाई गई। इसके बाद उत्तरदाताओं से व्यक्तिगत संपर्क करते हुए मिलने का प्रयोग बताया गया। उत्तरदाताओं को विश्वास दिलाया गया कि उनके द्वारा दी गई सूचनाओं को गोपनीय रखा जायेगा। तत्पश्चात् व्यक्तिगत सूचना-प्रपत्र का प्रयोग करते हुए प्रदत्त-संग्रह का कार्य किया गया। उत्तरदाताओं को आवश्यक सहयोग के लिए धन्यवाद दिया गया।

*** प्रदत्तों का विश्लेषण :**

संग्रहित किए गए प्रदत्तों का विश्लेषण पद्धति के आधार पर विश्लेषित किया गया और समसामयिक परिपेक्ष्य में परिणाम तैयार किया गया।

परिणाम :

तालिका संख्या-1

शिशुओं के पोषण पर माता-पिता के आपसी संबंध के प्रभाव का अध्ययन-परिणाम

समूह	संख्या	शिशुओं का पोषण स्तर	
		उत्तम	निम्न
अच्छे संबंध वाले माता-पिता	150	117 (78%)	33 (22%)
निम्न संबंध वाले माता-पिता	150	47 (31.33%)	103 (68.66%)

तालिका संख्या-2

शिशुओं के पोषण पर माता-पिता का बच्चों के प्रति
लगाव संबंधी कारक के प्रभाव का अध्ययन संबंधी परिणाम:

समूह	संख्या	शिशुओं का पोषण स्तर	
		उत्तम	निम्न
सकारात्मक लगाव वाले माता-पिता	150	95 (63.33%)	55 (36.67%)
नकारात्मक लगाव वाले माता-पिता	150	41 (27.33%)	109 (72.67%)

तालिका संख्या-3

शिशुओं के पोषण पर माता-पिता की जागरूकता
के प्रभाव का अध्ययन संबंधी परिणाम :

समूह	संख्या	शिशुओं के पोषण की स्थिति	
		उत्तम	निम्न
जागरूक रहनेवाले माता-पिता	150	103 (68.66%)	47 (31.33%)
जागरूक नहीं रहनेवाले माता-पिता	150	67 (44.66%)	83 (55.33%)

तालिका संख्या-4

शिशुओं के पोषण पर परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति
के प्रभाव का अध्ययन संबंधी परिणाम :

समूह	संख्या	शिशुओं के पोषण की स्थिति	
		उत्तम	निम्न
उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले परिवार के शिशु	150	103 (68.66%)	47 (31.33%)
निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले परिवार के शिशु	150	67 (44.66%)	83 (55.33%)

तालिका संख्या (1) के अवलोकन से स्पष्ट है कि माता-पिता के आपसी संबंध का स्पष्ट प्रभाव शिशुओं के पोषण स्तर पर पड़ता है, क्योंकि प्राप्त परिणाम में 150 वैसे परिवारों जिसमें माता-पिता के बीच का आपसी संबंध अच्छा था, के जहाँ 117 अर्थात् 78 प्रतिशत शिशुओं का पोषण-स्तर अच्छा पाया गया वहीं 33 अर्थात् 22 प्रतिशत शिशुओं का पोषण स्तर निम्न पाया गया। इस तरह के परिणाम के संबंध में स्पष्ट है कि

माता-पिता के बीच का संबंध अच्छा रहने से शिशुओं की देख-रेख एवं पोषण सही तरीके से होता है।

तालिका संख्या (2) के अवलोकन से स्पष्ट है कि सकारात्मक लगाव वाले माता-पिता के शिशुओं का पोषण स्तर बेहतर है, जबकि नकारात्मक लगाव वाले माता-पिता के शिशुओं का पोषण स्तर बेहतर नहीं है। इस तरह के परिणाम के संबंध में कहा जा सकता है कि शिशुओं के साथ माता-पिता का लगाव अच्छा होने से पोषण सही तरीके से हो पाता है। इसके विपरीत शिशुओं के साथ लगाव सही नहीं होने से शिशुओं का पोषण प्रभावित होता है, जिससे शिशु का विकास सही तरीके से नहीं हो पाता है।

तालिका संख्या (3) के अवलोकन से स्पष्ट है कि जागरूक रहने वाले कुल 150 माता-पिता के बच्चों में कुल 103 अर्थात् 68.66 प्रतिशत शिशुओं का पोषण स्तर अच्छा है, जबकि 47 अर्थात् 31.33 प्रतिशत शिशुओं का पोषण स्तर बेहतर नहीं है। इस संबंध में भी कहा जा सकता है कि शिशुओं के पोषण पर माता-पिता की जागरूकता का स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। माता-पिता के जागरूक होने से शिशुओं की पोषण संबंधी आवश्यकता का अंदाज माता-पिता को सहज होता रहता है और शिशुओं की देख-रेख एवं विकास सही तरीके से होता है।

तालिका संख्या (4) में प्रस्तुत किए गए परिणाम के अवलोकन से स्पष्ट है कि परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का भी सार्थक प्रभाव बच्चों के पोषण स्तर पर पड़ता है। इस तरह के परिणाम के संबंध में स्पष्ट है कि परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति अच्छी होने से शिशुओं की पोषण संबंधी आवश्यकताएँ सही ढंग से होती रहती है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोध के आधार पर निष्कर्ष के रूप में निम्नांकित तथ्य अवलोकित है :

- (i) शिशुओं के पोषण पर माता-पिता के आपसी संबंध का सार्थक एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- (ii) शिशुओं के पोषण स्तर पर माता-पिता का बच्चों के प्रति लगाव संबंधी कारक का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- (iii) जागरूक माता-पिता के शिशुओं का पोषण स्तर जागरूक नहीं रहनेवाले माता-पिता के शिशुओं के पोषण स्तर की अपेक्षा बेहतर होता है।

(iv) शिशुओं के पोषण पर परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का सकारात्मक एवं सार्थक प्रभाव पड़ता है।

सुझाव :

प्रस्तुत शोध के आधार पर सुझाव के रूप में कहा जा सकता है, कि शिशुओं का पोषण माता-पिता के आपसी संबंध एवं उनकी जागरूकता, बच्चों के प्रति लगाव और परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का सार्थक प्रभाव पड़ता है। अतः इस संदर्भ में शोधार्थी का सुझाव है कि शिशुओं के बेहतर पोषण के लिए इन कारकों पर ध्यान देना आवश्यक है और व्यापक स्तर पर शोध कार्य करके इस कार्य को प्रभावी बनाया जा सकता है।

संदर्भ सूची :

कुमारी, रेणू (2004) : “बच्चों के विकास में पोषण की भूमिका”, पोषण एवं स्वास्थ्य विज्ञान आधारित शोध-पत्रिका, वोल्यूम-1 (3), 120-127

जयप्रकाश (2007) : “बाल विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया”, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

डा० सिंह, वृन्दा (2000) : “आहार-विज्ञान एवं पोषण”, पंचशील प्रकाशन, जयपुर

यूनिसेफ, (1997) : स्टेट ऑफ द वर्ल्ड्स चिल्ड्रेन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, यू.के.